<u>स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड: नई दिल्ली</u>
<u>प्रबंधन सेवा प्रभाग</u>

दिनांक: 23.08.2012

<u>विषय: बैक-टु-बैक सौदों हेतु व्यापार मार्ग-निर्देशों में संशोधन-जोखिम प्रबंधन फ्रेम वर्क शामिल करना ।</u>

बैक-टु-बैक सौदों में व्यापार हेतु मार्ग-निर्देशों में एमएचडी के परिपत्र दिनांक 22 जून, 2012 द्वारा संशोधन किया गया था जिसमें सभी व्यावसायिक प्रस्तावों सहित जोखिम विश्लेषण और आकलन फार्मेट की अपेक्षित प्रस्तुति के लिए एक नए खंड 11.14 को शामिल करने की स्तुति की गई थी ।

विभिन्न जोखिम मानदण्डों के मूल्यों के परिगणन में एकरूपता लाने की दृष्टि से विभिन्न मूल्यों का परिगणन करते हुए अपनाए जाने वाली पद्धति तैयार की गई है, जो संलग्न है । यह बैक-टु-बैक सौंदों में व्यापार हेतु मार्ग-निर्देशों के अनुलग्नक-VII के रूप में इसका अंग होगी।

तदानुसार तत्काल प्रभाव से बैक-टू-बैक सौदों में व्यापार हेतु मार्ग-निर्देशों में संशोधन किया जाता है ताकि खण्ड-11.4 के प्रथम पैरे के अंत में निम्नलिखित को जोड़ा जा सके-

विभिन्न जोखिम मानदण्डों के मूल्यों के परिगणन हेतु पद्धति अनुलग्नक-VII में भी दी गई है ।

कृपया सभी संबंधित उपर्युक्त पर ध्यान दें ।

यह सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है ।

(ब्रिजेश प्रसाद)
उप महा प्रबंधक

सभी शाखा प्रबंधक/महा प्रबंधक/व्यापार और वित्त प्रभाग प्रमुख
सभी निदेशक/ मुख्य महा प्रबंधक
प्रति:अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

किसी व्यापारिक प्रस्ताव के जोखिम सूचकांक पर पहुँचने के लिए विभिन्न मानदण्डों के मूल्यों के गणन हेतु मार्गनिर्देश

1. वर्तमान अनुपात

$$\text{वर्तमान अनुपात} = \frac{\text{वर्तमान परिसम्पत्तियाँ}}{\text{वर्तमान देयताएँ}}$$

उपर्युक्त आंकड़े किसी कम्पनी के तुलन पत्र में पाए जाते हैं । वर्तमान परिसम्पत्तियों में माल सूचियाँ, फुटकर देनदार, रोकड़ एवं बैंक शेष, ऋण एवं पेशगियाँ और अन्य वर्तमान परिसम्पत्तियाँ शामिल हैं । इसी प्रकार से वर्तमान देयताओं में फुटकर लेनदार, देयताओं पर प्रावधान आदि शामिल हैं ।

2. लिवरेज अनुपात

$$\text{लिवरेज अनुपात} = \frac{\text{लधु अवधि ऋण} + \text{दीर्घावधि ऋण}}{\text{निवल मूल्य}}$$

उपर्युक्त आंकड़े किसी कम्पनी के तुलन पत्र में पाए जाते हैं । न्यूमिरेटर में सुरक्षित और असुरक्षित सहित कुल ऋण नीधियाँ शामिल हैं जब कि डिनोमिनेटर में कंपनी की शेयर पूँजी व आरक्षित एवं अधिशेष शामिल हैं ।

3. पार्टी के निवल मूल्य के प्रति एसटीसी एक्सपोजर का अनुपात

$$\text{पार्टी के निवल मूल्य के प्रति एसटीसी एक्सपोजर का अनुपात} = \frac{\text{वित्तीय मूल्य} \times 100}{\text{कंपनी का निवल मूल्य}}$$

वित्तीय मूल्य में वर्तमान प्रस्ताव में प्रस्तावित वित्त सहित एसोसिएट के वर्तमान बकाया शामिल होंगे । एसोसिएट कंपनी का निवल मूल्य इसके तुलनपत्र में पाया जाता है और इसमें कम्पनी की शेयर पूंजी और आरक्षित एवं अधिशेष शामिल हैं ।

4. <u>भुगतान पश्चात इतिवृत्त</u>

एसोसिएट के पूर्व के 12 महीनों के भुगतान और उठाई ट्रैक रिकार्ड पर विचार किया जाएगा तथा उन अधिकतम दिनों पर जिनमें पार्टी में किसी सौदे में सहमत हुए समयबद्ध कार्यक्रम की तुलना में उठाई / भुगतान के किसी सौदे में चूक की, उस पर उस मात्रा पर ध्यान दिए बगैर जिसके लिए चूक हुई, विचार किया जाएगा ।

उस मामले में जहाँ एसोसिएट के साथ पूर्व के 12 महीनों के दौरान कोई व्यवसाय नहीं हुआ किन्तु एसोसिएट ने पहले एसटीसी के साथ व्यवसाय किया था तब अद्यतन विगत सौदों हेतु भुगतान रिकार्ड पर विचार किया जाएगा ।

5. <u>औसत वार्षिक कीमत अस्थिरता</u>

औसत वार्षिक कीमत अस्थिरता = $\frac{\text{ए} - \text{बी}}{\text{बी}} \times 100\%$

जहाँ:-

ए = पूर्ववर्ती 12 कैंलेडर महीनों के दौरान जिनमें वर्तमान माह का छोड़कर जिसमें प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, मद की उच्चतम कीमत ।

बी = पूर्ववर्ती 12 कैंलेडर महीनों के दौरान जिनमें वर्तमान माह का छोड़कर जिसमें प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, मद की निम्नतम कीमत ।

जहाँ भी संभव हो मद की संदर्भ कीमतें पंजीकृत स्वदेशी अथवा अन्तरराष्ट्रीय मद विनिमय जैसे सीबीओटी, एलआईएफएफई, एलबीएमए, एनसीडीईएक्स, एमसीएक्स, एनएक्सपीओटी और / या प्रतिष्ठित प्रकाशनों जैसे आईजीसी, एफएओ, यूएसडीए, एग्रीवाच, राइटर, ब्लूमबर्ग, कोमोडिटी ऑनलाईन आदि से ली जानी चाहिए ।

6. <u>मार्जिन राशि</u>

आयातों के मामले में मार्जिन राशि सीआईएफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में दर्शायी जानी चाहिए जबकि निर्यातों के मामले में इसे प्रापण के स्थान पर माल के एफओबी मूल्य के प्रतिशत के रूप में दर्शाया जाना चाहिए ।

7. **माल का भंडारण**

जोखिम विश्लेषण एवं आकलन प्रोफार्मा के अनुसार

8. **भुगतान शर्तें**

जोखिम विश्लेषण एवं आकलन प्रोफार्मा के अनुसार

9. **लिफ्टिंग कार्यक्रम**

उठाई की अवधि लदान बिल की तारीख से गिनी जानी चाहिए ।

10. **पोतलदान हेतु लीड अवधि**

संविदा पर हस्ताक्षर करने की तारीख और पोतलदान करने की अंतिम तारीख के मध्य अंतर को पोतलदान हेतु लीड अवधि निकालने के लिए गणन किया जाना चाहिए ।